गुजराती अनुवाद.

प्रसिद्धकर्ता

डाह्याभाई पीतांबरदास देसाई

बॅरिस्टर-एट-लॉ.

[illegible] विद्यापीठ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ५

ગૂજરાત વિદ્યાપીઠ ગ્રંથાલય

[ગુજરાતી કૉપીરાઇટ વિભાગ]

અનુક્રમાંક ૬૨૮૫ વર્ગાંક

પુસ્તકનું નામ પાંચમી ની સાખનગારા
નાગરચરિપદના ... [illegible]

વિષય [illegible]

ओनरेबल डॉ. सुंदरलालजी, बी. ए; एल एल, बी; एल, एल, डी;

सी. आई. ई; एड्वोकेट अल्लाहाबाद,

एओश्रीए

वीसलनगरमां मळेली पांचमी वीसलनगरा नागर परिषद्‌ना

अध्यक्षस्थानथी आपेला इंग्रेजी भाषणनो

,गुजराती अनुवाद*.

ता. ६-१०-१८

सन्नारीओ अने सद्‌गृहस्थो !

वीसनगरा नागर परिषद्‌नी आ पांचमी बेठकना प्रमुख थवा मने आप सर्वेए निमंत्रण कर्युं छे ते माटे हुं आपनो अंतःकरण पूर्वक आभार मानुं छुं. आ परिषद् आपणा पुराणा अने ऐतिहासिक शहेर वीसनगर-जेना उपरथी आपणी ज्ञातिनुं नाम पडयुं छे, अने जे शहेर आपणी ज्ञातिना इतिहासनी साथे घणो निकटनो संबंध धरावे छे-तेमां मळे छे ते बहु आनंदनी वात छे. आजे आपणे आपणा पुरातन मूळ वतनमां एकत्रित थया छीए अने ते पण सामाजिक तथा आपणी ज्ञातिना हितना, परिषद्‌मां अने तेनी बहार गंभीर चर्चानो विषय थई पडेला, घणा विकट प्रश्नोनो विचार करवा माटे; ते अति आनंद अने अभिमाननी वात छे.

---

*अध्यक्षनी आज्ञाथी रा० रा० डाह्याभाई पीतांबरदास देरासरीए वांची संभळाव्यो हतो.

सन्नारीओ अने सद्‌गृहस्थो! मारी खात्री छे के आ अध्यक्ष-स्थानने शोभावे एवा आपणी ज्ञातिमां मारा करतां घणी रीते वधारे लायक अने समर्थ गृहस्थो बीजा घणा छे अने तेओ आजनी परिषद्‌ना नेतानुं कार्य मारा करतां वधारे कुशळताथी अने संतोषकारक रीते करी शकत. परन्तु आजनुं प्रमुखपद मने आपवानुं मुख्य कारण आप बंधुओनो मारा प्रत्येनो उमळकाभर्यो भाव ज छे. आ भाव गुजरातमां हुं ज्यां ज्यां गयो त्यां मारा जोवामां आव्यो छे. मारी पोतानी खामीओथी हुं अजाण्यो नथी, छतां आप सर्वेनी मारा प्रत्येनी स्नेहवृत्तिने लीधे आजनुं कर्तव्य स्वीकारवा में हाम भीडी छे. आपणा सामान्य हितनां कार्योमां यथाशक्ति मदद करवा हुं तत्पर छुं. आपे मने आ परिषद्‌नो प्रमुख नीम्यो ते हुं मोटुं मान अने प्रतिष्ठा मानुं छुं; अने तेने माटे हुं आपनो अत्यंत आभारी छुं.

सन्नारीओ अने सद्‌गृहस्थो! आपना प्रमुख तरीके आपणी समक्ष जे अगत्यना प्रश्नो रजु करवामां आवशे ते उपर चर्चा करवानो मारो धर्म नथी. तेम ज जूदां जूदां दृष्टिबिंदुथी अत्रे एकत्रित थएला गृहस्थो तरफथी अति समर्थ रीते जे विचारो दर्शावाशे ते अगाउथी चर्चवानुं पण मारुं कार्य नथी. मारा पोताना विचारो प्रथमथी तममाग्या आगळ धरवा करतां मारा आटला बधा भाईओने जे कहेवानुं होय ते सांभळवुं ए स्वाभाविक रीते मने वधारे रुचिकर छे. आम छतां पण केटलीक बाबतो एवी छे के जेना उपर सामान्य टीका करवानी अने तेने कई दृष्टिए जोवाथी ज्ञातिने ते वधु लाभकारक थई पडशे ते दर्शाववानी हुं रजा लईश. आवी

बाबतो तार तार करीने जूदी जूदी रीते तपासवाना करतां कया दृष्टिबिंदुथी ते तपासवी, तेना उपर विवेचन करवानुं हुं पसंद करूं छुं.

हालमां ठेकाणे ठेकाणे कोंग्रेसोमां, परिषदोमां अने मंडळोमां एम पुछाय छे के ज्ञातिनी परिषदोनो हिंदुसमाजनां नातजातना भेद विनानां सार्वलौकिक मंडळो साथेनो संबंध केवो होवो जोइए! मारो पोतानो मत आ बाबतमां एवो छे के आ प्रश्ननो विचार करवानो खरो रस्तो ए छे के आपणे बधाए एम समजवुं जोइए के आपणे पहेला हिंदवासी अने जूदी जूदी जातना पछी. एक जूनी अंग्रेजी कहेणी छे के दरेक माणस पोतानी ओसरी स्वच्छ राखे तो आखुं गाम स्वच्छ रहे. आपणा देशमां प्रजा जूदी जूदी नातो अने जातोमां विभक्त थएली छे अने जो ते दरेक नात अथवा जात पोते पोतानी स्थिति सुधारवा तथा पोतानी प्रगतिमां अंतरायरूप थई पडतां अनिष्टोनो उपाय करवा तथा विघ्नो दूर करवा उत्सुकताथी मंडी रहे तो जूदी जूदी जातो अने नातोथी बनेली आपणी समस्त प्रजानी प्रगति एटली बधी थाय के जे बीजी कोइ पण रीते साध्य बनवी संभवती नथी.

समाजनी दरेक व्यक्तिए समाजनुं सामान्य हित संपादन करवामां कांई कांई पण मदद करवी जोइए एम इंग्लांडमां मनाय छे. सत्य ते सघळी जगाए सत्य छे. जे वात त्यां सत्य छे ते आपणे अहिं पण सत्य छे. बल्के आपणी जूदी जूदी नातो अने जातोनी दरेक व्यक्ति सामान्य हितने माटे प्रयत्न करवामां साथे जोडाय अने पोतानी नात अगर जातनी उन्नतिनी साथे भारतवर्षनी उन्नति करे ए आपणा जूदी

नातजातथी बनेला समाजने इंग्लांड करतांए वधारे लागु पडे छे. आवा परिणाम तरफ लक्ष राखीने आ परिषदूना गृहस्थोए पोतानो नात तरफनो धर्म प्रमाणिकपणे अने अंतःकरण पूर्वक बजाववो जोइए के जेथी आपणी मातृभूमि जे भरतखंड तेनुं हित सुधारवानो आपणो धर्म पण सधाय.

ए हेतु सिद्ध करवाने शी रीते काम करवुं ए बीजो महत्त्वनो प्रश्न छे. मात्र कीए रस्ते काम करवूं ए नक्की करवुं ए जरुरनुं छे; कामनी विगत ए ओछा महत्त्वनी बाबत छे. सन्नारीओ अने सद्गृहस्थो! आपणी परिषदोनी यथेच्छ फतेह थती नथी तेनुं मूळ कारण आपणामां हिंदुस्थाननी बीजी घणी नातजातोनी पेठे सामान्य केळवणीनी खामी छे ए ज छे. दरेक जातनी प्रगतिने अंगे खास जरुरीआतनी केळवणी आपणां पुत्रपुत्रीओने मळे एवी रीतो खोळी काढवी अने केळवणीने सारु गोठवणो करवी ए आपणे प्रथम करवानुं कार्य छे. दरेक माबापना मनमां सारी रीते ए वात ठसवी जोइए के पोतानां संतानोनो विवाह करवो ए जेटली अगत्यनी वात छे तेटली ज अथवा तेथी पण वधारे अगत्यनी वात ए छे के एओने योग्य केळवणी आपवी; केमके गरीबाई अने अज्ञानमां घरसंसारनुं तरीलुं ताणवाना करतां केळवणीमां वधारे सुख समायलुं छे. पोते संकुचित स्थितिमां होवा छतां पण आपणा लोको विवाहप्रसंगे तथा तेवा उत्सवोमां घणी खुशीथी म्होटो खर्च करे छे. आवा लोकोने एटलो पण विचार आवतो नथी के जेटलो खर्च दिकरा अथवा दिकरीना विवाहमां करवामां आवे छे तेटलो ज खर्च तेमनी केळवणी पाछळ कर्यो होय तो तेथी तेमने वधु लाभ थाय. माबापने पण पोताना घरमां परणेल पण अभण

दिकरो के वहु होय तेनाथी जे आनंद थाय तेना करतां केळवणी पामेलां दिकरावहुथी वधु आनंद थई शके. आपणा पूर्वजो अने असलना समयना ऋषि मुनिओए दरेक छोकराना जीवननो अमुक भाग ब्रह्मचर्य आश्रममां विद्याभ्यास माटे नक्की करी राख्यो हतो. तेमणे हिंदु जनसमाजना चार मुख्य वर्ण के भाग पाडी नांख्या छे. तेमां ब्राह्मणो जे आपणा देशनी बुद्धिसंपत्तिनुं पवित्र साम्राज्य धरावनारुं महामंडळ छे तेओने धर्म अने ज्ञाननो प्रसार करवानुं सोंपवामां आवेलुं हतुं. तेमनो धर्म ज्ञान संपादन करवानो, ऊछरती प्रजाने ते आपवानो, तेमना विचार सुधारवानो, तेमनुं चारित्र्य घडवानो तथा जीवनना भविष्यनी सांसारिक मुश्केलीओ सामे फतेहमंदीथी बाथ भीडवाने तेमने समर्थ करवानो गणातो. तेओ शिक्षकनुं अने गुरुनुं कार्य करता अने तेमनाथी बनी शके तेटला विद्यार्थीओने मफत भणावता. मात्र विद्यार्थी ज्यारे अभ्यास करी रहे अने धंधे लागे त्यारे पोतानी शक्ति अनुसार पोताना गुरुने दक्षिणा आपता. मात्र केळवणीना संबंधमां ज आवा प्रकारनी व्यवस्था करी आपणा पूर्वजो संतोष मानी बेठा नहोता. दरेक माणसनी जींदगीना तेओए चार आश्रममां विभाग पाड्या हता. तेमांनो प्रथम आश्रम एटले लगभग पचीस वर्षनी उम्मर सुधीनो समय पोतानी बुद्धिना विकासने अर्थे अने मनने संस्कारमय बनाववाने माटे तेओ गाळता. आपणा धर्मनो मुख्य आदेश ज छे के आपणे आपणी केळवणीने माटे अंतरथी प्रयास कर्या करवो. मने दृढ विश्वास छे के मारा ज्ञातिबंधुओ जे ज्ञातिमां भूतकाळमां घणा महान पुरुषो जनम्या छे ते ज्ञातिना पोते छे ए वात कदी वीसरशे नहि अने तेमना उमदा दृष्टांतनुं अनुसरण करवानी तथा

आपणी ज्ञातिनुं उच्च स्थान साचवी राखवानी तेओ हमेश पोतानी फरज समजशे.

आखो देश प्राथमिक केळवणीना संबंधमां नामदार गायकवाड सरकारने आभारी छे, केमके तेमणे ते सर्वसुलभ अने फरजीयात करी छे. आ रीते तेओश्रीए केळवणीनो संगीन पायो नांखी आप्यो छे. ते उपरथी पोतानां संतानोने अगाडी ज्यादे केळवणी आपवानो विचार होय तो तेमने तेओश्रीए एक प्रकारनी अनुकूळता पण करी आपी छे. बीजां देशी राज्योए तेओश्रीना दृष्टांतनुं अनुसरण कर्युं छे. अने इंडिया सरकार जो के अमुक कारणो—जे साथे अत्यारे आपणने निसबत नथी तेने लईने—आ दिशामां कार्य करी शकी नथी छतां, पोतानी जरूरीयात प्रमाणे नियमो तथा धारा वगेरे करीने आ दिशामां प्रयास करवानी दरेक ज्ञातिनी फरज छे. यज्ञोपवीत पछी दरेक छोकरानी केळवणी बराबर शरु थाय छे. त्यारपछी ते विद्या भणवा बहार जवाने लायक थाय छे, अने तेने योग्य गुरुना हाथ नीचे मुकवामां आवे छे. आपणी ज्ञातिमां परंपराथी रिवाज चाल्यो आवे छे के यज्ञोपवीत पछी दरेक छोकरो थोडा समयने माटे पण घरनी बहार जाय छे. उत्तर हिंदुस्तानमां तो ए रिवाज हजु चाले छे. तेमां एवी मान्यता छे के ते विद्याभ्यास माटे काशी जाय छे. यज्ञोपवीत पछी ते विद्यार्थी अथवा ब्रह्मचारी थाय छे. असलना वखतमां तो तेने सारा शिक्षकनी शोधमां पुण्यधाम काशी सुधी भिक्षावृत्ति उपर निर्वाह करी जवुं पडतुं. रिवाज एवो छे के तेनी मा ज आ नवा ब्रह्मचारीने प्रथम भिक्षा आपे, पछी बीजां संबंधीओ आपे. आ जूनो रिवाज हाल मात्र नामनो ज रह्यो छे. ब्रह्मचर्य धारण कर्या पछी

मात्र थोडा कलाकमां उपनयनने बदले समावर्त्तननी क्रिया कराय छे. थोडा कलाकमां ज ब्रह्मचारी मटीने स्नातकनी विधि पछी पच्चीस वर्षने बदले तुरत ज गृहस्थाश्रमनी योग्यता आवी जाय छे ए शोचनीय छे. आपणा पूर्वजोनी धारणानुसार जो आ रिवाज बराबर पळाय तो आपणी ज्ञातिमां कोई अशिक्षित रहे नहि; आपणी ज्ञातिनी असल जे प्रतिष्ठा अने स्थिति हती ते स्थितिए आपणे हाल पण पहोंचीए अने ते प्रतिष्ठा हाल पण प्राप्त करीए. अलबत अत्यारना समयमां केळवणीनो प्रदेश घणो विस्तृत थयो छे. छोकरा तथा छोकरीओने केळवणी आपवानुं काम हाल घणुं खर्चाळ थई गयुं छे. अने तेमां वळी आपणी स्थिति अनुसार बीजी बाबतो साचववानी होय छे. बीजी ज्ञातिओ आगळ वधती जाय छे; अने आपणी ज्ञातिमां माबाप पोतानां बाळको प्रत्येनी फरजो नहि समजे, तो आपणे प्रगतिना मार्गमां घणा पाछळ पडी जइशुं. हिंदुओमां पोतानी ज्ञातिमां ज्ञातिना हितने माटे ज्यारे जरुर पडे त्यारे औदार्यनी खोट पडी नथी. आ औदार्यनो उज्ज्वळ दृष्टांत बनारसनी हिंदु युनिवर्सिटी छे. एवी आशा राखवामां आवे छे के आ विद्यापीठ थोडा समयमां कंइपण अंशमां न्यूनता वगर चालतुं थशे. मने खात्री छे के आ परिषद् केळवणीना विषय उपर पूरतुं लक्ष आपशे अने मात्र छोकराओ जेमने माथे भविष्यमां पोताना कुटुंबने माटे आजीविका मेळववानो भार आवी पडवानो छे, तेमनी ज एकलानी केळवणी उपर नहि पण छोकरीओ के जेओ भविष्यना हिंदनी माताओ थवानी छे तेमनी केळवणी उपर पण लक्ष आपशे. अमदावादमां आवां केटलांक शुभ चिन्हो जोवा हुं भाग्यशाळी थयो छुं, ते उपरथी मने लागे छे के मारी आग्रहयुक्त विज्ञप्ति

अने प्रोत्साहन मारी जशे नहि. छोकराओ तथा छोकरीओनी-बन्नेनी केळवणी उपर बराबर लक्ष अपावुं जोइए. कारण गृहसंसारमां बेमांथी एक पण अशिक्षित होय, तो तेथी खरी प्रगती थती नथी अने ज्यां ज्यां सुधाराना जरूर होय त्यां कौटुंबिक ऐक्य रहेतुं नथी.

आपणी पहेलांनी परिषदोमां घणा अगत्यना विषयो उपर चर्चा थई गई छे. तेमां एक विषय लग्न संबंधी नियमो बाबत अने छोकरीओनां लग्ननी वय बाबतनो हतो. बाळलग्नना अनिष्ट परिणामो सर्वने एटला सुविदित छे के ते विषे कांई कहेवानी अगत्य रहेती नथी. भविष्यनी प्रजानी शारीरिक अधोगति जेओ देशनुं हित हैये धारता होय तेमने माटे घणी अगत्यनी ध्यानमां लेवा जोग बाबत छे; अने तेनापर जेटलुं लक्ष आपवामां आवे तेटलुं ओछुं छे. वळी मोटी पहेरामणी लेवी ते तथा भारे रकम लई कन्या वेचवी ते पण एक महा गंभीर सामाजिक अनिष्ट छे अने तेनो उपाय तुरत करवानी जरूर छे. केळवणी लेवानो स्त्रीओने पण जन्मथी हक छे. मने भय रहे छे के ज्यां सुधी आपणी स्त्रीओने केळवणी नहि मळे त्यां सुधी आ तथा बीजां सामाजिक अनिष्टोनो उपाय करवानुं काम त्वराथी थशे नहि. आपणी वस्तुस्थिति आवी छेः—आपणी ज्ञातिरूपी विराट शरीरनुं एक पासुं आगळ वधवा तत्पर थई रह्युं छे, परंतु बीजुं पासुं—आपणुं प्रियतर अने शास्त्रवचन प्रमाणे मानपात्र पासुं—पक्षाघातथी रही गयेलुं होवाथी ए पूर्वोक्त पासानी गतिनो रोध करे छे; त्यां पछी एने बळ आपवानी तो वातज क्यां रही!

सन्नारीओ अने सद्‌गृहस्थो! मने भय लागे छे के केळवणी

उपर ज बीजण करीने में आपनो घणो समय लेई लीधो छे; परंतु केळवणी ते आपणी दरेक प्रकारनी स्थितिनी सुधारणानुं मूळ छे. हुं कबूल करुंछुं के आ विषय उपर मारो घणो पक्षपात छे. आम होवाथी आ लंबाणने माटे मने क्षमा करशो. कारण मारा जीवननो घणो भाग में ते विषयमां ज गाळ्यो छे. अने में ते बाबतमां जे सूचनाओ करी ते उपरथी जो ते विषय संबंधमां जेटलो जोइए तेटलो रस अने जागृत्ति उत्पन्न थशे, तो माराथी विशेष आनंद बीजा कोईने भाग्ये ज थशे. आपणी ज्ञातिना हितने लगता घणा प्रश्नो आ प्रश्न साथे घणो निकटनो संबंध धरावनारा छे तथा केटलाक तो तेमांथी ज उपस्थित थाय छे. दाखला तरीके विद्योपार्जनने माटे परदेशगमन करवानो सवाल समयने अनुसरीने आपणे ध्यान पर लेवो ज जोइए. कया प्रकारनी केळवणी उत्तम छे, शिष्ट अने शिल्पविषयक शिक्षण आपवाने माटे केवी गोठवणो थवी जोइए तथा पूर्वनी विद्या साथे पश्चिमनी विद्यानो योग शी रीते साधवो जोईए तेनो विचार केळवणीना अने राजतंत्रना चिंतकोने सोंपीए छीए. ए विचार करवाने आपणे अहिं मळ्या नथी छतां ते प्रश्न आपणां छोकरांना आत्यंतिक हितनो होवाथी आपणे सर्वेए तेमां रस लेवो जोइए.

आपणी ज्ञातिमां लांबा वखतथी घर करी रहेलो अनिष्ट प्रस्ताव ते नातोमां तड अने पेटातड पडी जवानो छे. आवा विभाग शाथी पडी जाय छे तेनां कारणो तपासवानुं अत्यारे मारुं काम नथी. पण केटली कार्यकर शक्तिनो तेमां क्षय थाय छे ते आपण सर्वने घणी आतुरताथी विचारवा योग्य प्रश्न छे. संपमां

ज बळ अने कुसंपमां ज निर्बळता छे. जो कोइ मांगलिक अथवा एवा बीजा प्रसंगोए अमुक उचराणुं करवानो ज्ञाति धारो बांधे अने सर्वे एकात्रित थइ पोतानी शक्ति प्रमाणे पोतानो फाळो आपे तो विधवा तथा मावाप वगरनां अनाथ बाळकोना पालनने माटे पोतपोताना गामोमां रकम उभी करवानी बहु मुश्केली पडे नहि. ज्ञातिनी मिल्कत उपर सत्ता राखवाना काममांथी तथा तेनो कबजो राखवानी गोठवणमांथी मतभेद उत्पन्न थाय छे अने तेमांथी घणी वखत खोटी लागणी उत्पन्न थई तड पडी जाय छे. आ बाबतमां संतोषकारक रीते गोठवण करवा शां पगलां लेवां ते सौए विचारवानुं छे.

हुं बोलवुं बंध करुं ते पहेलां मारे केटलीक शोककारक बीनानी नोंध लेवी ज जोइए. रा. बा. लालशंकर उमियाशंकर त्रिवेदीना मरणथी आपणी ज्ञातिने एक मोटी खोट पडी छे. मारे एमनी साथे अलाहाबाद कानफरन्समां पहेल वहेलो मेळाप थयो हतो. ए मेळाप एक प्रकारनुं मान समजुं छुं. तेओ जे थोडा दिवस त्यां रह्या हता ते दरम्यान तेमना प्रत्ये दरेक वर्गनी प्रीति अने पूज्यबुद्धि उत्पन्न थई हती ए कहेवानी भाग्ये ज जरुर छे. आपणी ज्ञातिना नेता तरीके अने सांसारिक प्रगतिना प्रश्नो दृढाग्रह पूर्वक हाथ धरनार तरीके तेमणे जे कांइ कर्युं छे ते आपणी ज्ञातिना इतिहासमां प्रमापकरूप नीवडशे. मने आशा छे अने भरुसो छे के बीजाओ पण आगळ पडशे. एमनो दृष्टांत लई तेमने पगले चालवा चुकशे नाहि. कमनशीबे आपणे बीजा पण बे दीलोजानीथी काम करनार खोई बेठा छीए. तेओ खरा उत्साहथी कार्यक्षे-

त्रनुं स्वरूप आंकवामां बहु आगळ पडतो भाग लेता हता. हुं रा.रा.महेता फतेहचंदजी अने रा. रा. जानी नारायणदास विषे कहेवा मागुं छुं. वास्तविक रीते आग्रा कोन्फरन्स बधी रीते फतेहमंद नीवडयुं हतुं तेमां खरेखरा सहायभूत थनार रा. रा. फतेहचंदजी हता अने रा. रा. जानी नारायणदास अलाहाबादमां कोन्फरन्स मळ्युं हतुं तेना तंत्री हता. तेमणे जे दृष्टान्त आप्यो छे तेने आपणा युवको जो अनुसरशे तो लाभ थशे. देशकाळ प्रमाणे प्रगतिमां आगळ वधवुं, एक उच्च वर्ग तरीके आपणुं आस्तित्त्व टकावी राखवा माटे खास जरुरनुं छेः अने जो आपणे उंघमांथी जागीशुं नहि अने आपणा आचार विचार अने व्यवहारनी कोटि आपणा वातावरणनी परिस्थितीने अनुकुळ नहि करीए तो आपणे पाछळ पडी जईशुं. अने भूतकाळमां आपणे जे दरज्जो भोगवता हता अने हजुपण भोगवीए छीए ते हमेशने माटे खोई बेसीशुं. ए ज छेवट एक ज्ञातिभाई तरीके मारे तमने विज्ञापना करवानी छे अने प्रोत्साहना आपवानी छे.

અમદાવાદ.

કાળુપુર ટંકશાળમાં ધી યુનિયન પ્રિન્ટિંગ પ્રેસ કંપની લીમીટેડમાં

મોતીલાલ શામળદાસે છાપી.